E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

हल्सन्धि या व्यञ्जन सन्धि (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

1. स्तोः श्चुना श्चु

सकारतवर्गयोः शकारचवर्गाभ्यां योगे शकारचवर्गौ स्तः। रामश्शेते। रामश्चिनोति।

क) **प्रसङ्ग-**

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति-**

संहितायाम्

ग) **अर्थ-**

संहिता के विषय में जब 'स' और 'तवर्ग' के किसी वर्ण का जब 'श्' और 'चवर्ग' के किसी वर्ण से योग होता है तो 'स' के स्थान पर 'श्' और तवर्ग के स्थान पर चवर्ग आदेश होता है।

घ) **व्याख्या-**

यहाँ स, त,थ, द, ध, न- ये छः स्थानी तथा श, च, छ, ज, झ, ,ञ- ये आदेश हैं। अतः समान होने के कारण 'यथासंख्यमनुदेशः समानाम्' परिभाषा से ये आदेश क्रमशः होंगे। कहने का तात्पर्य है कि 'स्' के स्थान पर 'श्', 'त्' के स्थान पर 'च्', 'थ्' के स्थान पर 'छ्', 'द्' के स्थान पर 'ज्', 'ध्' के स्थान पर 'झ्' तथा 'न्' के स्थान पर 'ञ्' होता है।

ङ) **उदाहरण-**

रामस् शेते----------राम स् शेते----------राम श् शेते--------रामश्शेते

च) **टिप्पणी-**

प्रयोगों के आधार पर इस सूत्र के विषय में दो बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

यद्यपि आदेश यथासंख्य होते हैं, किन्तु योग के विषय में यथासंख्य नहीं होता अर्थात् यह आवश्यक नहीं कि सकार का शकार से, तकार का योग चकार से, थकार का योग छकार से, दकार का योग जकार से, धकार का योग झकार से और नकार का योग ञकार से होने पर ही सकार आदि को क्रमशः शकार आदि आदेश हो। दूसरे शब्दों में, शकार या चवर्गस्थ किसी वर्ण के साथ योग होने पर सकारादि के स्थान पर शकारादि होते हैं। उदाहरण के लिए रामस् चिनोति में सकार का योग चकार से हुआ है। फिर भी इस सकार को शकार हो रामश्चिनोति रूप बनता है।

यह आवश्यक नहीं कि शकारादि परे होने पर ही सकारादि को शकारादि हो।वस्तुतः शकारादि चाहे सकारादि के आगे आवें या पीछे-दोनों ही अवस्थाओं में सकारादि के स्थान पर शकारादि होते हैं। उदाहरण के लिए 'याच् + ना में चकार के पश्चात् नकार आया है। फिर भी चकार के योग में नकार को ञकार हो 'याच् ञ् आ'= याञ्चा रूप सिद्ध होता है।

2. शात् (8/4/44)

शात्परस्य तवर्गस्य श्चुत्वं न स्यात्। विश्नः। प्रश्नः।

क) **प्रसङ्ग-**

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति-**

'तोः षिः' (8/4/43) से 'तोः', 'स्तोः श्चुना श्चुः' (8/4/40) से 'श्चुः', 'न पदान्ताट्टो रनाम्' (8/4/42) से 'न'

ग) **अर्थ-**

शकार के पश्चात् तवर्ग के स्थान पर श्चुत्व नहीं होता।

घ) **व्याख्या-**

वास्तव में यह 'स्तोः श्चुना श्चुः' का अपवाद है। शकार का योग (पूर्व या पर) होने पर 'स्तोः श्चुना श्चुः' से तवर्ग के स्थान पर चवर्ग प्राप्त होता है। यहाँ इसी का निषेध किया गया है। इस प्रकार सूत्र का स्पष्टार्थ होगा-'शकार' के पश्चात् त, थ, द, ध, और न के स्थान पर क्रमशः च, छ, ज, झ, और ञ आदेश नहीं होते।

ङ) **उदाहरण-**

उदाहरण के लिए 'प्रश् नः' में शकार के पश्चात् नकार आया है।'स्तोः श्चुना श्चुः' से शकार के योग में इस नकार को ञकार प्राप्त होता है, किन्तु प्रकृत सूत्र से उसका निषेध हो जाता है। निषेध होने पर 'प्रश् नः' =प्रश्नः रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार विश्+नः=विश्नः। यहाँ ध्यातव्य है कि शकार से पर तवर्ग के स्थान पर ही चवर्ग का निषेध किया गया है, अतः यदि तवर्ग से पर शकार होगा तो 'स्तोः श्चुना श्चुः' से तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जायेगा। उदाहरण के लिए, यावत् + शक्यम् में तवर्गस्थ तकार के पश्चात् शकार आया है, अतः 'स्तोः श्चुना श्चुः' से तकार के स्थान पर चकार हो 'यावच् शक्यम्= यावच्शक्यम् रूप बनता है। (वैसे शश्छोटि से शकार के स्थान पर विकल्प से छकार हो यावच्छक्यम् रूप भी बनता है।)

3. **ष्टुना ष्टुः** (8/4/41)

स्तोः ष्टुना योगे ष्टुः स्यात्। रामष्षष्ठः। रामष्टीकते। पेष्टा। तट्टीका। चक्रिण्ढौकसे।

क) **प्रसङ्ग-**

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति-**

'स्तोः श्चुना श्चुः' से स्तोः

ग) **अर्थ-**

ष् और टवर्ग से योग होने पर स् और तवर्ग को ष् और टवर्ग आदेश होता है।

घ) **व्याख्या-**

ष्, ट्, ठ्, ड्, ढ् या, ण् के योग में स्, त्, थ्, द्, ध्, न् के स्थान पर क्रमशः ष्, ट्, ठ्, ड्, ढ और ण् आदेश होते हैं।

ङ) **उदाहरण-**

उदाहरण के लिए रामस् + षष्ठः में षकार का योग सकार से हुआ है, अतः प्रकृत सूत्र से यहाँ सकार के स्थान पर षकार जो रामष् षष्ठः= रामष्षष्ठः रूप सिद्ध होता है।इसी प्रकार रामस्+टीकते= रामष् टीकते= रामष्टीकते।

च) **टिप्पणी-**

यह आवश्यक नहीं कि षकारादि सकारादि से पर ही हों। षकारादि चाहे सकारादि से पूर्व हों या पर-दोनों ही अवस्थाओं में सकारादि को षकारादि होता है। उदाहरण के लिए पेष+ता में षकार के पश्चात् तकार आया है, किन्तु फिर भी यहाँ षकार के योग में तकात को टकार हो पेष् ट् आ= पेष्टा रूप बनता है।

4. न पदान्ताट्टोरनाम्

पदान्ताट्टवर्गात्परस्याऽनामः स्तोः ष्टुर्न स्यात्। षड्नन्तः।षट्ने।पदान्तात् किम्-ईट्टे। टोः किम्-सर्पिष्टम्।

(वा०) अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्। षण्णाम्। षण्णवतिः। षण्णगर्यः।

क) **प्रसङ्ग-**

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति-**

'स्तोः श्चुना श्चुः' से 'स्तोः', 'ष्टुना ष्टुः' से 'ष्टुः'

ग) **अर्थ-**

पदान्त में स्थित टवर्ग के बाद सकार और तवर्ग के स्थान में षकार और टवर्ग नहीं होता, किन्तु 'नाम्' (के 'न') को टवर्ग-'ण' हो जाता है।

घ) **व्याख्या-**

यदि पद के अन्त में टवर्ग का कोई वर्ण हो तो उसके बाद- i) सकार हो तो सकार के स्थान पर षकार नहीं होता। ii) तवर्ग हो तो तवर्ग के स्थान पर टवर्ग नहीं होता। iii) यदि 'नाम्' हो तो 'नाम्' के 'न्' को 'ण्' हो जायेगा।

ङ) **उदाहरण-**

षट् + सन्तः----- यहाँ 'ट्' (टवर्ग) पदान्त है, इसके बाद 'स्' है, अतः प्रकृतसूत्र से 'स्' के स्थान पर 'ष्' आदेश का निषेध हो गया और रूप यथावत 'षड्नन्तः' ही रहा।

षट् + ते-------यहाँ ट (टवर्ग) पद के अन्त में है और उसके बाद त् (तवर्ग) है, इसलिए प्रकृतसूत्र से 'त्' के स्थान पर 'ट्' आदेश का निषेध हुआ और रूप पूर्ववत् रहा।

च) **टिप्पणी-**

प्रश्न उठता है कि सूत्र में 'पदान्तात्' कहने का क्या प्रयोजन है? यदि टवर्ग पद के अन्त में न होगा तो टवर्ग के बाद में होने वाले तवर्ग कर स्थान पर टवर्ग हो जायेगा। यथा- ईट् + ते---यहाँ टवर्गस्थ टकार के पश्चात् तकार आया है। किन्तु यह टकार पदान्त में नहीं है, अतः यहाँ प्रकृतूत्र से उससे पर तकार के स्थान पर टकार का निषेध नहीं होता। निषेध नहीं होने पर 'ष्टुना ष्टुः' सूत्र से तकार को टकार हो ईट् टे= ईट्टे रूप सिद्ध होता है।

पुनः टवर्ग के पश्चात् ही सकार और तवर्ग के स्थान पर षकार और टवर्ग का निषेध होता है, पदान्त षकार के पश्चात् सकार और तवर्ग के विषय में यह निषेध नहीं होता। उदाहरणार्थ- सर्पिष् + तमम्= सर्पिष् ट् अमम्= सर्पिष्टमम्।

ध्यातव्य है कि इस सूत्र से पूर्व योग होने पर ही ष्टुत्व का निषेध होता है, टवर्ग का परयोग होने पर नहीं। टवर्ग परे होने पर सकार और तकार के स्थान पर क्रमशः षकार और टवर्ग तो होंगे ही। उदाहरण के लिए 'तत्+टीका=तट्टीका' रूप सिद्ध होता है।

(वा०) अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्। वार्तिक का अर्थ- पदान्त टवर्ग से परे नाम्, नवति तथा नगरी शब्दों के नकार को छोड़कर अन्य सकार और तकार के स्थान पर षकार और टवर्ग का निषेध करना चाहिए। उदाहरण-षड्+नाम्=षण्णाम्, षड्+नवतिः=षण्णवतिः, षड्+नगर्यः=षण्णगर्यः।

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

5. तोः षिः (8/4/43)

तवर्गस्य षकारे परे न ष्टुत्वम्। सन्षष्ठः।

क) **प्रसङ्ग-**

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति-**

'ष्टुना ष्टुः' से 'ष्टुः' तथा 'न पदान्ताट्टोरनाम्' से 'न'

ग) **अर्थ-**

तवर्ग के बाद 'ष्' हो तो तवर्ग के स्थान पर ष्टुत्व (टवर्ग) नहीं होता है।

घ) **व्याख्या-**

वास्तव में यह सूत्र 'ष्टुना ष्टुः' का अपवाद है। 'ष्टुना ष्टुः' से षकार के योग में तवर्ग के स्थान पर क्रमशः टवर्ग प्राप्त होता है, यहाँ प्रकृत सूत्र से उसी का निषेध किया गया है। इस प्रकार सूत्र का स्पष्टार्थ होगा-षकार परे होने त, थ, द, ध् और न् के स्थान पर क्रमशः ट्, ठ्, ड्, ढ्, और ण् आदेश नहीं होते।

ङ) **उदाहरण-**

'सन् + षष्ठः' में षकार के योग में नकार के स्थान पर 'ष्टुना ष्टुः' से णकार प्राप्त होता है, किन्तु षकार परे होने के कारण प्रकृत सूत्र से उसका निषेध हो जाने पर सन्षष्ठः रूप सिद्ध होता है।

च) **टिप्पणी-**

ध्यातव्य है कि षकार का परयोग होने पर ही ष्टुत्व का निषेध होता है, पूर्व-योग होने पर नहीं। षकार से परे तवर्ग के स्थान पर टवर्ग ही होता है। उदाहरण के लिए पेष्+ता=पेष्टा।

6. **झलां जशोऽन्ते** (8/2/39)

पदान्ते झलां जशः स्युः। वागीशः।

क) **प्रसङ्ग**-

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति**-

पदस्य (8/1/16)

ग) **अर्थ**-

पदान्त में विद्यमान 'झल्' वर्णों के स्थान पर 'जश्' वर्ण हो जाते हैं।

घ) **व्याख्या**-

यहाँ पदस्य का अधिकार प्राप्त होता है। इस 'पदस्य' का अन्वय सूत्रस्थ 'अन्ते' से होता है। 'झल्' और 'जश्' प्रत्याहार हैं। 'झल्' प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण तथा श्, ष्, स्, ह् और 'जश्' प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्गों के तृतीय वर्ण आते हैं। इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा-पदान्त (पद के अन्त में आए हुए) झल् (वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण तथा श्, ष्, स्, ह्) के स्थान पर जश् (वर्गों के तृतीय वर्ण) आदेश होते हैं। ये आदेश 'स्थानेऽन्तरतमः' परिभाषा से होंगे।'स्थानेऽन्तरतमः' परिभाषा से झलों के स्थान पर जश् आदेश इस प्रकार होंगे-

क्रम संख्या	झल् वर्ण	साम्य स्थान	जश् वर्ण
1	झ्, ज्, छ्, च्, श्	तालु	ज्
2	भ्, ब्, फ्, प्	ओष्ठ	ब्
3	घ्, ग्, ख्, क्, ह्	कण्ठ	ग्
4	ढ्, ड्, ठ्, ट्,ष्	मूर्धा	ड्
5	ध्, द्, थ्, त्, स्	दन्त	द्

ङ) **टिप्पणी**-

i) हकार के स्थान पर 'हो ढः' से ढकार हो जाता है।

ii) सकार के स्थान पर 'ससजुषो रुः' से 'रु' (र्) हो जाता है।

iii) इस सूत्र का फल प्रायः तभी दिखलाई पडता है जब झलों से परे 'खर्' (वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण तथा श, ष, र) न हों, क्योंकि 'खर्' परे होने पर 'खरि च' से प्रकृतसूत्र से विहित 'जश्' के स्थान पर पुनः 'चर्' आदेश हो जाते हैं।

च) **उदाहरण-**

वाक् + ईशः= वाग् ईशः= वागीशः

7. यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (8/4/45)

यरः पदान्तस्यानुनासिके परेऽनुनासिको वा स्यात्। एतन्मुरारिः।एतद्मुरारिः।

क) **प्रसङ्ग-**

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति-**

'न पदान्ताट्टोरनाम्' से 'पदान्तात्'

ग) **अर्थ-**

पद के अन्त में वर्तमान 'यर्' वर्ण के बाद यदि अनुनासिक वर्ण हो तो 'यर्' के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक हो जाता है।

घ) **व्याख्या-**

'पदान्तात्' सूत्रस्थ 'यरः' का विशेषण होने से षष्ठ्यन्त में विपरिणत हो जाता है। 'यर्' प्रत्याहार है और उसके अन्तर्गत हकार को छोडकर सभी व्यञ्जन आ जाते हैं। 'अनुनासिक' उस वर्ण को कहते हैं जो मुख और नासिका-दोनों की सहायता से बोला जाए- मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः।(1/1/8)। इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा-अनुनासिक परे होने पर पदान्त (पद के अन्त में आये हुए) यर् (हकार भिन्न व्यञ्जन) के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक आदेश होता है।

ङ) **टिप्पणी-**

व्यञ्जन अनुनासिक पाँच हैं- ङ्, ञ, ण, न, म्। 'यर्' प्रत्याहार में यद्यपि वर्गस्थ वर्ण और श, ष, स, र् का ग्रहण होता है तथापि वर्गस्थ वर्णों को छोडकर श, ष, स् और र् के स्थान पर अनुनासिक के उदाहरण नहीं मिलते। इस प्रकार सूत्र का व्यवहारोपयोगी अर्थ होगा-ङकार, ञकार, णकार, नकार या मकार परे होने पर पदान्त कवर्गस्थ, चवर्गस्थ, टवर्गस्थ, तवर्गस्थ और पवर्गस्थ वर्णों के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक वर्ण आदेश होता है। 'स्थानेऽन्तरतमः' सूत्र से कवर्गस्थ वर्ण के स्थान पर ङकार, चवर्गस्थ वर्ण के स्थान पर ञकार, टवर्गस्थ वर्ण के स्थान पर णकार, तवर्गस्थ वर्ण के स्थान पर नकार, पवर्गस्थ वर्ण के स्थान पर मकार आदेश होगा।

च) **उदाहरण-**

उदाहरण के लिए 'एतद् + मुरारि= एतन्मुरारिः। यहाँ तवर्गस्थ दकार के पश्चात् मकार आया है। अतः प्रकृत सूत्र से इस दकार के स्थान पर अनुनासिक-नकार हो 'एतन्मुरारिः' रूप सिद्ध होता है। किन्तु यह अनुनासिक आदेश विकल्प से ही होता है, अतः उसके अभाव में 'एतद्मुरारिः' रूप ही रहता है।

छ) **वार्तिक**-

प्रत्यये भाषायां नित्यम्-लोक में अनुनासिकादि (जिसके आदि में अनुनासिक हो) प्रत्यय परे होने पर पदान्त यर् के स्थान पर नित्य अनुनासिक आदेश होता है। 'भाषायाम्' प्रयोग से ज्ञात होता है कि यह वार्तिक लौकिक संस्कृत में प्रवृत्त होता है, वैदिक संस्कृत में नहीं। उदाहरण- तद् + मात्रम्= तन्मात्रम्। तद् + मयम्= तन्मयम्।चिद् + मयम्= चिन्मयम्।

8. तोर्लि (8/4/60)

तवर्गस्य लकारे परे परसवर्णः। तल्लयः। विद्वाल्ँ लिखति।नस्यानुनासिको लः।

क) **प्रसङ्ग**-

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति**-

अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः (8/4/58) से परसवर्णः

ग) **अर्थ**-

यदि तवर्ग के बाद ल् हो तो तवर्ग के स्थान पर ल् का सवर्ण आदेश होता है।

घ) **व्याख्या**-

तवर्ग के अन्तर्गत त, थ, द, ध, न् वर्ण आते हैं। लकार परे रहने पर त, थ, द, ध, न् के स्थान पर परसवर्ण आदेश होता है। यहाँ पर लकार है। लकार का लकार के अतिरिक्त अन्य कोई सवर्ण नहीं। अतः कहा जा सकता है कि लकार परे होने पर तवर्ग के स्थान पर लकार ही आदेश होता है।

ङ) **स्पष्टीकरण**-

लकार दो प्रकार का होता है, एक अनुनासिक (ल्ँ) और दूसरा अननुनासिक (ल्)। स्थानेऽन्तरतमः परिभाषा के अनुसार तवर्गस्थ अनुनासिक वर्ण के स्थान पर अनुनासिक लकार तथा अननुनासिक वर्ण के स्थान पर अननुनासिक लकार होगा। तवर्गों में न् के सिवा अन्य कोई अनुनासिक नहीं है। अतः केवल नकार के स्थान पर ही अननुनासिक लकार होता है।

च) **उदाहरण**-

तद् + लयः---------त द् लयः----------तल् लयः----------तल्लयः

विद्वान् + लिखति-------विद्वा न् लिखति------ विद्वा ल्ँ लिखति-----विद्वाल्ँलिखति।

9. आदेः परस्य (1/1/53)

परस्य यद् विहितं तत्तस्यादेर्बोध्यम् इति सस्य थः।

क) **प्रसङ्ग**-

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति**-

अलोऽन्त्यस्य (1/1/52) से 'अलः'

ग) **अर्थ**-

पर पद के स्थान में जो कार्य विहित हो वह कार्य उस परपद के आदि वर्ण के स्थान में समझना चाहिए।

घ) **व्याख्या**-

अलः का अन्वय सूत्रस्थ आदेः से होता है। इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा-पर के स्थान पर विधान किया गया कार्य उसके आदि अल् के स्थान पर होता है। तात्पर्य यह कि पञ्चम्यन्त पद का उच्चारणकर जो आदेश पर के स्थान पर किया जाता है, वह आदेश पर के आदि वर्ण के स्थान पर ही होता है, सम्पूर्ण पर या पर के अन्त्य वर्ण के स्थान पर नहीं।

ङ) **उदाहरण**-

उद् + स्थानम्--------- उद् स् थानम्------उद् थ् थानम्-------उद् थानम् (झरो झरि सवर्णे से थ् का विकल्प से लोप)--------- उत् थानम् (खरि च से 'द्'----'त्')---------- उत्थानम्

उद् + स्तम्भनम्----- उद् स् तम्भनम्----------उद् थ तम्भनम्----------उद् तम्भनम् (झरो झरि सवर्णे से थ् का विकल्प से लोप)------ उत् तम्भनम् (खरि च से 'द्'----'त्')-----उत्तम्भनम्

10. खरि च (8/4/55)

खरि झलां चरः स्युः। इत्युदो दस्यः सः। उत्थानम्।उत्तम्भनम्।

क) **प्रसङ्ग-**

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति-**

झलां जश् झसि (8/4/53) से 'झलाम्' तथा अभ्यासे चर्च से वचन परिणाम करके 'चरः'

ग) **अर्थ-**

'झल्' वर्णों के बाद यदि 'खर्' हो तो 'झल्' के स्थान पर 'चर्' हो जाता है।

घ) **व्याख्या-**

'झल्', 'खर्' और 'चर्' तीनों ही प्रत्याहार हैं। 'झल्' प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्गों के पञ्चम वर्णों को छोड़कर सभी व्यञ्जन आ जाते हैं। 'खर्' के अन्तर्गत वर्गों के द्वितीय और प्रथम वर्ण तथा श, ष, स् और 'चर्' के अन्तर्गत वर्गों के प्रथम वर्ण और श, ष् या स् आते हैं। इस प्रकार सूत्र का भावार्थ हुआ- खर् (क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्, श, ष, या स्) परे होने पर झल् (ङ्, ञ्, ण्, न् और म् **को छोड़कर अन्य व्यञ्जन**) के स्थान पर चर् (क्, च्, ट्, त्, प्, श,ष और स्) आदेश होते हैं।

ङ) **उदाहरण-**

विपद् + कालः----- विप द् कालः--------विप त् कालः---------विपत्कालः।

दिग् + पालः------ दि ग् पालः---------- दि क् पालः--------दिग्पालः।

11. झयो होऽन्यतरस्याम् (8/4/62)

झयः परस्य हस्य वा पूर्वसवर्णः। नादस्य घोषस्य संवारस्य महाप्राणस्य हस्य तादृशो वर्गचतुर्थः। वाग्घरिः।वाग्हरिः।

क) **प्रसङ्ग**-

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति**-

उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य (8/4/61) से पूर्वस्य तथा अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः (8/4/58) से 'सवर्णः'

ग) **अर्थ**-

'झय्' के बाद यदि 'ह्' हो तो 'ह्' के स्थान पर विकल्प से पूर्वसवर्ण आदेश होता है।

घ) **व्याख्या**-

सूत्रस्थ 'झय्' प्रत्याहार है और उसके अन्तर्गत वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण आते हैं। इस प्रकार इस सूत्र का भावार्थ होगा- वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ वर्ण के पश्चात् हकार के स्थान पर विकल्प से पूर्व वर्ण का सवर्ण होता है।

ङ) **स्पष्टीकरण**-

'स्थानेऽन्तरतमः' परिभाषा से गुणगत सादृश्य के आधार पर संवार, नाद, घोष और महाप्राण यत्नवाले हकार के स्थान पर उसी प्रकार वर्गों का चतुर्थ वर्ण आदेश होगा। दूसरे शब्दों में क्, ख्,ग्,घ् के पश्चात् हकार रहने से घकार, च्, छ्, ज्, झ् के पश्चात् हकार के स्थान पर झकार, ट्, ठ्, ड्, ढ् के पश्चात् हकार रहने से ढकार, त्,थ्, द्, ध्, न् के पश्चात् हकार रहने से धकार और प्, फ्, ब्, भ् के पश्चात् हकार रहने से भकार आदेश होता है।

वाग् हरिः------वाग् ह् अ रिः----वाग् घ् अरिः --- वाग्घरिः/वाग्हरिः

अज् + हीनम्-----अज्झीनम्/अज्हीनम्

मधुलिड् + हसति----मधुलिङ्हसति/मधुलिड्हसति

तद् + हानिः-----तद्धानिः/तद्हानिः

त्रिष्टुब् + हसति----त्रिष्टुब्भसति/ त्रिष्टुब्हसति।

12. **शश्छोऽटि** (8/4/63)

झयः परस्य शस्य छो वा स्यादटि। तद्शिव इत्यत्र दस्य श्चुत्वेन जकारे कृते खरि चेति जकारस्य चकारः। तच्छिवः, तच्शिवः। (वा०) 'छत्वममीति वाच्यम्'। तच्छ्लोकेन।

क) **प्रसङ्ग**-

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति**-

'झयो होऽन्यतरस्याम्' (8/4/62) से 'झयः' एवं 'वा पदान्तस्य' से पदान्तस्य की अनुवृत्ति

ग) **अर्थ**-

'झय्' से परे 'श्' के बाद यदि 'अट्' हो तो 'श्' के स्थान पर 'छ्' हो जाता है।

घ) **व्याख्या**-

पदान्तस्य पञ्चम्यन्त में विपरिणत हो 'झयः' का विशेषण बनता है। 'झय्' और 'अट्' दोनों प्रत्याहार हैं। इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा-अट् (सभी स्वर और ह्, य्, व्, र्) परे होने पर पदान्त 'झय्' (वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण) के पश्चात् शकार के स्थान पर विकल्प से छकार आदेश होता है। दूसरे शब्दों में, शकार के स्थान पर छकार होने के लिए दो बातें आवश्यक हैं-

शकार के पश्चात् कोई स्वर या ह्, य्, व् अथवा र् होना चाहिए।

और उस शकार के पूर्व पद के अन्त में आनेवाले किसी वर्ग का प्रथम, द्वितीय या चतुर्थ वर्ण होना चाहिए।

ङ) **उदाहरण**-

तद् + शिवः -------- तज् शिवः (स्तोः श्चुना श्चुः से)-------तच् शिवः (खरि च से)---------तच् श् इवः------तच् छ् इवः (प्रकृत सूत्र से)-----तच्छिवः

विकल्प से तच्शिवः रूप भी सिद्ध होता है।

च) **वार्तिक**-

'छत्वममीति वाच्यम्'- यह प्रकृत सूत्र पर वार्तिक है। अर्थ है-'अम् परे होने पर पदान्त 'झय्' से पर शकार के स्थान पर विकल्प से छकार हो-ऐसा कहना चाहिए। यहाँ 'अम्' प्रत्याहार है और उसके अन्तर्गत सभी स्वरवर्ण, ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, ङ्, ण्, न्, और म् आते हैं।

वास्तव में यह वार्तिक प्रकृतसूत्र का विस्तारक मात्र है। प्रकृत सूत्र से 'अट्' परे होने पर ही शकार को छकार आदेश होता है और इस प्रकार 'तच् + श्लोकेन'='तच्छ्लोकेन' आदि रूप सिद्ध नहीं होते। इसी कमी को दूर करने के लिए ही वार्तिककार ने सूत्रस्थ 'अटि' के स्थान पर 'अमि' रखने को कहा है। 'अम्' परे होने पर कहने से सभी रूप सिद्ध हो जाते हैं।

जैसे- तद् + श्लोकेन-------तज् श्लोकेन------तच् श्लोकेन-------तच्छ्लोकेन। छकारादेश के अभाव में 'तच्श्लोकेन' रूप सिद्ध होता है।

13. **मोऽनुस्वारः** (8/3/23)

मान्तस्य पदस्यानुस्वारो हलि। हरिं वन्दे।

क) **प्रसङ्ग**-

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति**-

हलि सर्वेषाम् (8/3/22) से 'हलि' और पदस्य (8/1/16)

ग) **अर्थ**-

यदि मान्त पद के बाद हल् हो तो उस मान्त पद के स्थान पर अनुस्वार आदेश होता है।

घ) **व्याख्या**-

सूत्रस्थ 'मः' पदस्य का विशेषण है, अतः उसमें तदन्त विधि हो जाती है। 'अनुस्वार' वर्णों के ऊपर रखे हुए बिन्दु को कहते हैं। इस प्रकार सूत्र का भावार्थ हुआ- हल् (व्यञ्जन) परे होने पर मकारान्त पद के स्थान पर अनुस्वार आदेश होता है।'अलोऽन्त्यस्य' परिभाषा के अनुसार पद के अन्त्य वर्ण मकार के स्थान पर ही होता है।

ङ) **उदाहरण**-

उदाहरण के लिए 'हरिम् वन्दे' में पदान्त मकार है और उसके पश्चात् व्यञ्जन वकार भी आया है।अतः प्रकृत सूत्र से इस मकार के स्थान पर अनुस्वार हो 'हरिं वन्दे' रूप बनता है।

च) **स्पष्टीकरण**-

मकार के स्थान पर अनुस्वार होने के लिए दो बातों का होना आवश्यक है-

मकार के पश्चात् कोई व्यञ्जन होना चाहिए।उदाहरण के लिए 'तम् + आगच्छति' में पदान्त मकार तो है, किन्तु उसके पश्चात् स्वर-आकार है, व्यञ्जन नहीं।अतः यहाँ मकार को अनुस्वार न हो 'तमागच्छति' रूप बनता है।

उस मकार को पद के अन्त में होना चाहिए-उदाहरणार्थ 'गम्यते' में मकार के पश्चात् व्यञ्जन-यकार तो है, किन्तु यह मकार पदान्त नहीं है। अतः प्रकृतसूत्र से इस अपदान्त मकार को अनुस्वार नहीं होता है और 'गम्यते' रूप ही रहता है।

14. **अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः** (8/4/58)

स्पष्टम्। शान्तः।

क) **प्रसङ्ग**-

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अर्थ**-

यदि अनुस्वार के बाद 'यय्' प्रत्याहार का वर्ण हो तो अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण आदेश होता है।

ग) **व्याख्या**-

यय् प्रत्याहार है और उसके अन्तर्गत और उसके अन्तर्गत वर्गों के समस्त वर्ण और य्, व्, र्, ल् आते हैं। 'स्थानेऽन्तरतमः' परिभाषा से अनुस्वार के स्थान पर वर्गस्थ वर्ण परे होने पर तद्वर्गीय पञ्चम वर्ण, य् परे होने पर अनुनासिक यँ, व् परे होने पर अनुनासिक वँ, ल् परे होने पर अनुनासिक लँ आदेश होता है। 'र्' का कोई अनुनासिक वर्ण नहीं होता, अतः रकार परे होने पर अनुनासिक के स्थान पर परसवर्ण होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

घ) **स्पष्टीकरण**-

यहाँ ध्यातव्य है कि यह सूत्र अपदान्त अनुस्वार के विषय में ही प्रवृत्त होता है, क्योंकि पदान्त अनुस्वार के लिए 'वा पदान्तस्य' सूत्र प्रवृत्त होता है। अपदान्त अनुस्वार से पर य्, व् और ल् के उदाहरण नहीं मिलते।

ङ) **उदाहरण-**

शां + तः= शा म् तः-------शा न् तः-------शान्तः

अन् + कितः= अङ्कितः

अन् + चितः= अञ्चितः

कुन् + ठितः= कुण्ठितः

गुम्+ फितः= गुम्फितः

15. वा पदान्तस्य (8/4/59)

त्वङ्करोषि, त्वं करोषि।

क) **प्रसङ्ग-**

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति-**

अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः (8/4/58)

ग) **अर्थ-**

पदान्त अनुस्वार के बाद यदि 'यय्' हो तो उस अनुस्वार के स्थान में विकल्प से पर अर्थात् 'यय्' का सवर्ण होता है।

घ) **व्याख्या-**

'अनुस्वारस्य' का अन्वय सूत्रस्थ 'पदान्तस्य' से होता है। यय् परे होने पर पदान्त अनुस्वार के स्थान पर विकल्प से परसवर्ण आदेश होता है। पदान्त अनुस्वार के स्थान पर कवर्गस्थ वर्ण परे होने पर ङकार, चवर्गस्थ वर्ण परे होने पर ञकार, टवर्गस्थ वर्ण परे होने पर णकार, तवर्गस्थ वर्ण परे होने पर नकार, पवर्गस्थ वर्ण परे होने पर मकार,य् वर्ण परे होने पर यँ, व् वर्ण परे होने पर वँ, ल् वर्ण परे होने पर लँ आदेश होता है।

ङ) **उदाहरण**-

त्वम् + करोषि -----त्वं करोषि (मोऽनुस्वारः से)-----त्वङ्करोषि/त्वं करोषि

आम्रम् +चूषति----आम्रं चूषति-----आम्रञ्चूषति/ आम्रं चूषति

ऊर्ध्वम् + डीयते--- ऊर्ध्वं डीयते-----ऊर्ध्वण्डीयते/ ऊर्ध्वं डीयते

नदीम् + तरति-----नदीं तरति------नदीन्तरति/ नदीं तरति

शिवम् भजति------शिवं भजति-----शिवम्भजति/शिवं भजति

दानम् + यच्छति----दानं यच्छति------दानयँ् यच्छति/दानं यच्छति

हरिम् + वन्दे-------हरिं वन्दे-------हरिवँ् वन्दे/ हरिं वन्दे

अहम् + लिखामि----- अहं लिखामि------अहल्ँ लिखामि/ अहं लिखामि

16. छे च (6/1/73)

ह्रस्वस्य छे तुक्। शिवच्छाया।

क) **प्रसङ्ग**-

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति**-

ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् (6/1/71) से 'ह्रस्वस्य' और 'तुक्' तथा 'संहितायाम्' (6/1/72)

ग) **अर्थ**-

संहिता के विषय में ह्रस्व को तुक् आगम होता है, छकार परे रहते।

घ) **व्याख्या**-

'तुक्' कित् है। अतः आद्यन्तौ टकितौ परिभाषा से यह तुक् अन्तावयव होता है।

ङ) **उदाहरण**-

शिव + छाया (शिवस्य छाया इति विग्रहः, षष्ठी तत्पुरुषसमासः) -----यहाँ ह्रस्व अकार से छकार परे है और समास होने से संहिता का विषय भी है।अतः प्रकृत सूत्र से इस वकारोत्तरवर्ती अकार को 'तुक्' (त्) को 'शिव त् छाया' रूप बनता है।'स्तोः श्चुना श्चुः' के असिद्ध होने से पहले 'झलां जशोऽन्ते' से तकार को दकार होकर 'शिव द् छाया' रूप बनेगा। तब 'खरि च' के असिद्ध होने से 'स्तोः श्चुना श्चुः' से दकार को जकार हो 'शिव ज् छाया' रूप बनने पर पुनः 'खरि च' जकार को चकार हो 'शिवच्छाया' रूप सिद्ध होता है।

17. पदान्ताद्वा (6/1/76)

दीर्घात्पदान्ताच्छे तुग् वा। लक्ष्मीच्छाया। लक्ष्मीछाया।

क) **प्रसङ्ग**-

प्रकृत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के हल् सन्धि प्रकरण से गृहीत है।

ख) **अनुवृत्ति**-

'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' (6/1/71) से 'तुक्', 'छे च'(6/1/71) से 'छे' तथा दीर्घात् (6/1/75)

ग) **अर्थ**-

यदि पद के अन्त में दीर्घ स्वर हो और उसके बाद में 'छ्' हो तो उस दीर्घ स्वर को विकल्प से 'तुक्' का आगम होता है।

घ) **व्याख्या**-

छकार परे होने पर पदान्त (पद में आने वाले) दीर्घ (आ, ई, ऊ आदि) का अवयव विकल्प से 'तुक्' (त्) होता है। 'कित्' होने के कारण 'आद्यन्तो टकितौ' परिभाषा से यह 'तुक्' (त्) पदान्त दीर्घ का अन्तावयव होगा।

ङ) **उदाहरण-**

उदाहरण के लिए लक्ष्मी + छाया में दीर्घ ईकार पद के अन्त में आया है मौर उसके पश्चात् छकार भी है। अतः प्रकृतसूत्र से दीर्घ-ईकार को 'तुक्' (त्) हो लक्ष्मी त् छाया रूप बनता है। लक्ष्मी त् छाया-----लक्ष्मी द् छाया ('झलां जशोऽन्ते' से तकार को दकार)—लक्ष्मी ज् छाया ('स्तोः श्चुना श्चुः' से दकार को जकार)-----लक्ष्मी च् छाया ('खरि च' जकार को चकार)-लक्ष्मीच्छाया तुकागम के अभावपक्ष में लक्ष्मीछाया रूप ही रहता है।